Fahum
B+D
3-7-20
200

Personality व्यक्तित्व : व्यक्तित्व समाजशास्त्र मनोविज्ञान की अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय अवधारणा है। व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के Personality शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जो लैटिन भाषा के Persona शब्द से निकला है जिसका अर्थ है नकाब अथवा मुखौटा पहनना। Persona शब्द भी ग्रीक भाषा के Prosopon शब्द से बना है जिसका अर्थ है आकृति अथवा चेहरे का भाव। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में व्यक्तित्व का अर्थ है किसी व्यक्ति का बाहरी रूप अर्थात जैसा वह बाहर से दिखता है।

मनोवैज्ञानिकों ने इसे भिन्न भिन्न ढंग से परिभाषित किया है। Allport ने 50 परिभाषाओं की एक सूची तैयार की है जिन अर्थों में व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग किया जाता है।

Allport के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति की उन मनोदैहिक पद्धतियों का गतिशील संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अद्वितीय समायोजन स्थापित करता है।" Allport ने इस परिभाषा में मनोदैहिक विशेषताओं के साथ साथ समायोजन अनुकूलन की विशेषता को भी महत्व प्रदान किया है, उन्होंने व्यक्तित्व को मनोवैज्ञानिक और शारीरिक गुणों का संगठन माना है।

Kimball Young के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति की आदतों, मनोवृत्तियों, शारीरिक लक्षणों और विचारों की वह संगठित व्यवस्था है जो आत्मनिष्ठा

और आत्म की धारणा तथा अन्य बहुत से प्रेरकों परिस्थितियों तथा भूमिकाओं से सम्बन्धित विचारों और मूल्यों से निर्मित होती है। अपनी इस परिभाषा में उसने व्यक्ति की शारीरिक तथा आन्तरिक दोनों ही विशेषताओं को सम्मिलित किया है।

Drever के अनुसार "व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता है लेकिन सबसे अधिक व्यापक और संतोषजनक अर्थ यह है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों का वह परस्पर सम्बद्ध और गतिशील संगठन है जो सामाजिक जीवन के लक्ष्य प्राप्ति के आदान प्रदान में अन्य व्यक्तियों के समक्ष स्पष्ट होता है"।

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण तथा व्याख्या से यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व एक विशेष परिवेश द्वारा प्रभावित विभिन्न आदतों, मनोवृत्तियों, क्षमताओं आदि का एक ऐसा संगठन है जिसका संस्कृति से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। वास्तव में संस्कृति ही व्यक्ति का परिवेश होती है।

व्यक्तित्व का सम्बन्ध सुन्दरता तथा शरीर की संरचना से नहीं होता है बल्कि व्यक्तित्व अनेक मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गुणों की समग्रता है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति के स्थायी गुणों से होता है, जन्म के पश्चात व्यक्ति सीख की प्रक्रिया द्वारा इसे निर्मित करता है। साथ ही यह बात भी स्पष्ट करना जरूरी है कि व्यक्तित्व एक स्थिर विशेषता नहीं है बल्कि यह परिस्थितियों, ज्ञान के संचय, साधनों अवसरों की प्राप्ति तथा समस्याओं के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

Scanned with CamScanner